जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

लड़ाती कषाय व स्वार्थ है और बदनाम धर्म होता है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ6

वर्ष : 27, अंक : 5 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

38 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

देवलाली (महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली द्वारा दिनांक 9 मई से 26 मई, 2004 तक आयोजित 38 वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के समाचार मई (द्वितीय) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं। विस्तृत समाचार इसप्रकार हैं -

शिविर में प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: समयसार का सार पर एवं रात्रि में चार अनुयोग, व्यवहारनय भेद-प्रभेद, भगवान महावीर आदि विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

प्रारंभिक चार दिनों में दोनों समय पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन हुये।

रात्रि कालीन प्रथम प्रवचन - पण्डित अभयकुमारजी छिन्दवाड़ा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, ब्र. हेमचन्दजी हेम, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित दिनेशभाई शाह, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी मुम्बई एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये।

दैनिक कार्यक्रम - प्रात: 5 से 5.30 बजे तक गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, 5.30 से 6.15 बजे तक प्रौढ़ कक्षा, 6.15 से 7 बजे तक जिनेन्द्र पूजन, 7 से 8.15 बजे तक वीतराग-विज्ञान की सैद्धान्तिक कक्षा, 8.15 से 9.15 बजे तक गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन, 9.15 बजे से मुख्य प्रवचन, 10.15 से 11.15 बजे तक पंचलब्धि, क्रमबद्धपर्याय एवं बाल कक्षायें।

दोपहर में 1 से 2.30 बजे तक अभ्यास कक्षायें, 2.30 से 3.15 तक व्याख्यानमाला, 3.15 से गुणस्थान विवेचन एवं लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा तथा 4.15 से 5.30 बजे तक प्रशिक्षण कक्षायें चलीं।

सायंकाल 6.30 बजे से गुणस्थान विवेचन व लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (अंग्रेजी) की कक्षा, 7.15 बजे से जिनेन्द्र भक्ति, 7.45 से 8.30 बजे तक प्रथम प्रवचन, 8.30 बजे से द्वितीय प्रवचन तथा 9.30 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दोपहर व्याख्यानमाला में पण्डित जिनचन्दजी अमलान, पण्डित सुनीलजी नाके, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित जीवरामजी नासिक, पण्डित अमोल सिंघई, पण्डित सचिन पाटनी, पण्डित संजयजी राऊत, पण्डित विजयसेनजी पाटील, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, पण्डित प्रशांतजी मोहरे एवं पण्डित आलोकजी कारंजा के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विचार गोष्ठी - दोपहर में क्रमबद्धपर्याय पर विचार गोष्ठी आयोजित हुई; जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप गहराई से समझाया। संचालन पण्डित अमोलजी शास्त्री कातनेश्वर ने किया।

कक्षायें - क्रमबद्धपर्याय की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, पंचलब्धि की कक्षा डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा मुम्बई, वीतराग-विज्ञान (सैद्धा.) पण्डित अभयकुमारजी छिन्दवाड़ा व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, गुणस्थान विवेचन दो समय ब्र. यशपालजी जैन, बालबोध प्रशिक्षण (सैद्धा) पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कोमलचन्दजी, परीक्षामुख व अंग्रेजी कक्षा ब्र. हेमचन्दजी हेम भोपाल ने दी।

अन्य बालकों की हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, कन्नड में कक्षायें ली गई।

प्रतिदिन रात्रि में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

प्रशिक्षण कक्षाओं के अध्यापक - पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा, पण्डित

(शेष पृष्ठ - 4 पर .....)

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

9

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा ११

उत्पत्ती व विसाणो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो।
विगमुप्पादधुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया।।११।।

(हरिगीत)

उत्पाद-व्यय से रहित केवल सत् स्वभावी द्रव्य है।
द्रव्य की पर्याय ही उत्पाद-व्यय-ध्रुवता धरे।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न द्रव्य का कभी उत्पाद या विनाश नहीं होता सदा सद्भाव ही रहता है। हाँ, उसकी पर्यायें विनाश, उत्पाद और ध्रुवता करती हैं।

समय व्याख्या टीका में आचार्य अमृतचन्द्र नयों की भाषा में स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि ह्न यहाँ द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ह्न इन दोनों नयों द्वारा द्रव्य का लक्षण विभक्त किया है, इन दोनों की अपेक्षा से द्रव्य के लक्षण के दो विभाग किए हैं।

सहवर्ती गुणों और क्रमवर्ती पर्यायों के सद्भावरूप, त्रिकाल स्थित रहनेवाले, अनादि-अनन्त द्रव्य के विनाश और उत्पाद उचित नहीं है; परन्तु उसकी पर्यायों के अर्थात् सहवर्ती गुण-पर्यायों के ध्रौव्य होने पर भी अन्य क्रमवर्ती पर्यायों के विनाश और उत्पाद होना घटित होता है। इसलिए द्रव्य द्रव्यार्थिकनय के कथन से उत्पाद रहित, विनाश रहित, सत् स्वभाववाला ही होता है। वही द्रव्य पर्यायार्थिकनय के कथन से उत्पादवाला और विनाशवाला होता है।

यह सब कथन निर्दोष एवं निर्बाध है, क्योंकि द्रव्य और पर्यायों का अभेद है, अभिन्नपना है।

इसी अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए अठारहवीं शताब्दी के कविवर स्व.हीरानन्द विद्वान ने पद्य में कहा है कि ह्न

व्यय उत्पाद न दरब कै, लसत सदा सद्भाव।
व्यय-उत्पाद ध्रुवत्व विधि, पर्याय दृष्टि लखाव।।

द्रव्यार्थिकनय से द्रव्य के उत्पाद-व्यय नहीं है, वह तो सदैव सत् भावरूप से ही रहता है। उत्पाद-व्यय-ध्रुव तो पर्यायार्थिकनय की दृष्टि से कहे गये हैं।''

नयों के स्पष्टीकरण में और भी कहा है ह्न

द्रव्यार्थिकनय द्रव्य दिखावै, पर्यायार्थिकनय क्रम उपजावै।
दोऊ नै विरोध पर हरई, सम्यग्दृष्टि यथावत धरई।।
सम्यग्दृष्टि जीव कै जनी जथारथ दृष्टि।
नय विकास में जगमगै, केवल गुन की दृष्टि।।

द्रव्यार्थिकनय की दृष्टि से द्रव्य स्वभाव दिखाई देता है, द्रव्य का स्वभाव जाना जाता है और पर्यायार्थिकनय की नजर से उसमें होनेवाले परिवर्तन जाने जाते हैं। दोनों नय से वस्तु के दोनों धर्म दिखाई देते हैं, जिन्हें सम्यग्दृष्टि यथार्थ जानता है।

ऐसे नयों से वस्तु के यथार्थ स्वरूप को जानने से वीतराग भाव और केवलज्ञान सूर्य प्रगट हो जाता है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने इस गाथा के माध्यम से इस बात का खुलासा किया है कि छहों द्रव्यों में गुण और पर्यायें हैं, उनमें त्रिकाल सहवर्ती परिणाम गुण और प्रतिसमय होनेवाला उत्पाद-व्यय पर्याय है। अत: यह बात सिद्ध हुई कि प्रत्येक द्रव्य कायम रहने की अपेक्षा से नित्य है तथा पर्याय दृष्टि से अनित्य और नाशवान है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि द्रव्यदृष्टि से आत्मा ध्रुव है इसलिए उसकी पर्याय अलग रह जाती हो ह्न ऐसा नहीं है; परन्तु पर्याय दृष्टि से वही द्रव्य ध्रुव रहकर बदलता है। जैसे हाथ चक्की का निचला पाट स्थिर रहता है और ऊपर का पाट फिरता है, घूमता है, इसीप्रकार गुण त्रिकाल स्थिर रहते हैं और पर्यायें बदलती हैं ह्न ऐसा नहीं है, नित्यता का संबंध रखे बिना अनित्यता भिन्न ही रहती है ह्न ऐसा नहीं है। द्रव्यार्थिकनय से नित्य होने पर भी पर्यायार्थिकनय से वही द्रव्य अनित्यरूप होता है।

पूर्व पर्याय के व्यय और नई पर्याय के उत्पाद की अपेक्षा से विसदृशपना है और ध्रुवपने की अपेक्षा से सदृशतापना है। जैसे कुण्डल, कड़ा आदि अवस्थाएँ स्वर्ण से अत्यन्त पृथक् नहीं होती हैं। सुवर्ण ही पीलापन, चिकनापन आदि ध्रुवरूप रहकर कुण्डल, कड़ा इत्यादि पर्याय रूप होता है। इसीप्रकार आत्मद्रव्य सदृश रूप रहकर मिथ्यात्व-सम्यक्त्वरूप होता है; परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि एक समय में पूरा द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार समझकर पर का लक्ष्य छोड़कर स्वसन्मुख झुके तो स्वभाव की दृष्टि होती है।

जिसको धर्म करना हो उसको सर्वप्रथम आत्मा का स्वरूप समझना चाहिए। इसीलिए यहाँ आत्मा के तीन लक्षणों का वर्णन किया गया है। वस्तु सत् है अर्थात् सत् गुण है और वस्तु गुणी है। दूसरा लक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रुव कहा था। सत्ता सामान्य लक्षण है और उत्पाद-व्यय-ध्रुव विशेष लक्षण है। द्रव्य का तीसरा लक्षण गुण-पर्याय है। द्रव्यार्थिकनय से नित्य दृष्टि की अपेक्षा द्रव्य नित्य है और पर्यायार्थिकनय से पलटने की अपेक्षा अनित्य है। इन दो नयों के पहलुओं से वस्तु की निर्बाध सिद्धि होती है।

इस गाथा में एक बात तो यह उभरकर आयी है कि ह्न द्रव्य व गुणों के पलटने का नाम ही पर्याय है, द्रव्य व गुण त्रिकाल स्थिर रहे हैं और पर्यायें

पलटती हैं ह्न ऐसा नहीं है; क्योंकि द्रव्य व गुणों से पृथक् पर्याय नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। गुरुदेव कहते हैं कि ह्न ''द्रव्यदृष्टि से आत्मा ध्रुव है; इसलिए उसकी पर्याय अलग रह जाती है ह्न ऐसा नहीं है; परन्तु पर्यायदृष्टि से वही द्रव्य ध्रुव रहकर बदलता है।''

दूसरी बात यह आई है कि यदि परद्रव्य के कारण द्रव्य की अवस्था को होना माने तो द्रव्य का प्रतिसमय पलटने के स्वभाव का ही नाश होने का प्रसंग प्राप्त होगा, जबकि प्रतिसमय पलटना तो वस्तु का स्वभाव है। हाँ, जब द्रव्य अपने स्व-चतुष्टय से स्वत: पलटता है तो उस काल कार्य-कारण के अविनाभावी स्वभाव से पाँच समवाय भी स्वत: होते ही हैं।

इस वस्तुव्यवस्था की सच्ची समझ और यथार्थ श्रद्धा से जीव पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार होकर स्वत: ही स्वभाव सन्मुखता का पुरुषार्थ जागृत करके मोक्षमार्ग में अग्रसर होता है। ●

गाथा १२

पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूवेंति।।१२।।

(हरिगीत)

पर्याय विरहित द्रव्य नहीं नहिं द्रव्य बिन पर्याय है।
श्रमणजन यह कहें कि दोनों अनन्य-अभिन्न हैं।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न ''पर्यायों रहित द्रव्य और द्रव्य रहित पर्यायें नहीं होतीं। दोनों का अनन्यभाव, अनन्यपना है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न ''यहाँ द्रव्य और पर्यायों का अभेद दर्शाया है। जिसप्रकार दूध, दही, मक्खन, घी आदि से रहित गोरस नहीं होता, उसीप्रकार पर्यायों से रहित द्रव्य नहीं होता तथा जिसप्रकार गोरस से रहित दूध, दही, मक्खन, घी नहीं होते, उसीप्रकार द्रव्य से रहित पर्यायें नहीं होतीं। इसलिए यद्यपि द्रव्य और पर्यायों का कथनवश कथंचित भेद है; तथापि वे एक अस्तित्व में होने के कारण अन्योन्य वृत्ति नहीं छोड़ते, एक-दूसरे का आश्रय नहीं छोड़ते अर्थात् परस्पर कार्य-कारण संबंध से भी एकत्व ही बना रहता है। इसलिए वस्तुरूप से उनका अभेद है।

इसी भाव को कविवर हीरानन्द ने अपनी पद्यमय भाषा में इसप्रकार लिखा है। वे कहते हैं ह्न

(दोहा)

परजय-विजुद न दरव है, दरव बिन न परजाय।
अजुतरूप दोनौं लसै, कहत सिरीजिनराय ।।८५।।

(सवैया)

दूध दही घीव छाछि बिना ज्यौं गोरस नाहिं,
तैसैं परजाय बिना द्रव्यकौ न गावै है ।
गोरस बिना ज्यौं दूध दही घीव छाछि नाहिं
द्रव्य बिना तैसैं परजाय न कहावै है।।
तातैं द्रव्य परजाय कहनेमैं भेद सधै,
वस्तुतैं सरूप एक भेद नाहीं भावै है ।
स्यादवादवादी ह्वै कै द्रव्य परजाय जानै,
केवल सरूप भायै मोखरूप पावै है ।।८६।।

(दोहा)

दरव और परजायमैं, कथनमात्र करि भेद।
अस्तिरूप परदेस करि, वस्तु सदा निरभेद।।८७।।

इसी बात को गुरुदेवश्री कानजी स्वामी ने अनेक उदाहरणों से पंचास्तिकाय प्रवचन में जो खुलासा किया है, उसका संक्षेप सार यह है कि ह्न ''द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिकनय से वस्तु में भेद होने पर भी वस्तुत: अभेद है। प्रत्येक वस्तु का ऐसा स्वतंत्र स्वरूप है कि प्रतिक्षण पर्याय बदलती है और मूलवस्तु ज्यों की त्यों कायम रहती है। वस्तु का स्वरूप ऐसे दो भेदवाला होने पर भी वस्तु अभेद है।''

आगे और खुलासा करते हुए वे कहते हैं कि ह्न ''देखो, यह पंचास्तिकाय का अधिकार है। यदि पदार्थ पर के कारण हो तब तो पाँच का अस्तिपना ही नहीं ठहरता। अत: पदार्थ का अस्तिपना है और उसके दो अंश हैं। एक त्रिकाल अंश और दूसरा वर्तमान अंश है ह्न द्रव्य स्वयं से है, इस अपेक्षा द्रव्य और पर्याय की एकता है। ऐसा होने पर भी कथन की अपेक्षा समझाने के लिए भेद किया जाता है; परन्तु वस्तु के स्वरूप का विचार करने पर भेद नहीं है। संज्ञा, संख्या, लक्षणादि से भेद होने पर भी वस्तु में भेद नहीं है।

यदि कोई ऐसा माने कि अवस्था का परिवर्तन संसारदशा में होता है, सिद्धदशा में नहीं तो द्रव्य सिद्धदशा में पर्याय रहित ठहरता है; परन्तु वहाँ भी द्रव्य पर्यायरहित नहीं रहता; क्योंकि पर्याय और द्रव्य का परस्पर एक अस्तित्व है तथा सिद्धदशा स्वयं जीव की निर्मल पर्याय है।

यहाँ आत्मा और परमाणु आदि समस्त द्रव्यों की बात है। एक आत्मा दूसरे आत्मा के कारण नहीं है, एक पुद्गल दूसरे पुद्गल के कारण नहीं है, प्रत्येक का अस्तित्व पृथक्-पृथक् है। प्रत्येक के अस्तित्व में एक द्रव्य तथा दूसरा पर्याय का अंश है ह्न इसप्रकार दो अंश हैं, वे दोनों अंश अभिन्न हैं।''

सार यह है कि सम्यग्ज्ञान नेत्र से देखने पर वस्तु मूलत: निर्भेद है जैसे कि कुण्डल-कड़े आदि पर्यायों के भेद होने पर भी स्वर्ण दोनों में एक ही होता है। जो स्याद्वादी ऐसे वस्तु के यथार्थ स्वरूप को समझ कर श्रद्धा करते हैं, वे वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को समझकर समताभाव पूर्वक स्वरूप में स्थिर होकर शीघ्र निर्वाणपद को प्राप्त करते हैं। ●

(पृष्ठ – 1 का शेष ...)

कमलकुमारजी जैन पिड़ावा, पण्डित नरेन्द्रजी जैन जयपुर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित सुनीलजी नाके, पण्डित संजयजी राउत, पण्डित अमोलजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री, श्रीमती राजकुमारीजी, श्रीमती निशी जैन, श्रीमती लताजी रोम, श्रीमती रंजना बंसल, श्रीमती जयश्रीजी फुसकले तथा कु. अनुप्रेक्षा जैन ।

श्रुतपंचमी – इस अवसर पर दिनांक 24 मई, 2004 को जिनवाणी रथ में लेकर जुलूस निकाला गया; जिसके पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रासंगिक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन – दिनांक 25 मई को दोपहर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता में एवं पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई के मुख्यआतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन संतोष जैन बकस्वाहा और कु. ज्ञप्ति जैन छिन्दवाड़ा ने किया।

प्रशिक्षण रिपोर्ट : देशभर से पधारे 218 प्रशिक्षणार्थियों में बालबोध प्रशिक्षण में 181 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 37 बालकों ने भाग लिया। परीक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत रहा।

बालबोध प्रशिक्षण में **प्रथमस्थान** प्रियंका जैन पुत्री श्री मुकेश जैन जबलपुर ने, **द्वितीयस्थान** गजेन्द्र जैन पुत्र श्री अमृतलालजी भीण्डर (राज.) ने तथा **तृतीयस्थान** तपिश जैन पुत्रश्री लालचन्दजी खैरादीबाडी-उदयपुर ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में **प्रथमस्थान** सुश्री आरती जैन छिन्दवाड़ा, **द्वितीयस्थान** अंकित जैन कोलारस तथा **तृतीयस्थान** अभिषेक जैन केलवाड़ा, प्रसन्न शेठे कोल्हापुर एवं कु. नेहा जैन जबलपुर ने प्राप्त किया।

समापन समारोह : दिनांक 25 मई, 2004 को रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री सुमनभाई दोषी, श्री विक्रमभाई कामदार, श्री बलूभाई, श्री शांतिभाई जबेरी, श्री मुकुन्दभाई खारा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

संचालन पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर ने किया।

शिविर के अवसर पर जैन नर्सरी, रत्नकरण्डश्रावकाचार (अंग्रेजी), जैन के.जी. 1, 2, 3 एवं बालबोध गाइड (मराठी) का विमोचन किया गया। लगभग 40 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 11 हजार रुपयों के कैसेट्स घर-घर पहुँचे।

शिविर में सम्पूर्ण भारतवर्ष से लगभग 1200-1300 मुमुक्षु भाई-बहिन पधारे तथा 234 लोगों ने कण्ठ पाठ सुनाया। **– प्रवीण शास्त्री**

विभिन्न अवसरों पर प्राप्त दान राशियाँ

1. श्री जमनालालजी रतनलालजी सेठी, लालकोठी जयपुरवालों की सुपुत्री सौ.कां. प्रियंका का चि. अनिल जैन दौसा के साथ दिनांक 20 अप्रैल को विवाह के अवसर पर 1 हजार रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुये।

2. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री पुत्र श्री शम्भूकुमारजी बड़ामलहरा का विवाह सौ. प्रीति सुपुत्री श्री विजयकुमारजी जैन नागपुर के साथ दिनांक 11 मई, 2004 को हुआ है। इस प्रसंग पर दिनेश जैन, देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर द्वारा 201/- रुपये सधन्यवाद प्राप्त हुये ।

3. श्रीमती मृदुला रविकुमारजी की सुपुत्री एवं श्रीमती चन्द्रादेवीजी, जनता कॉलोनी, जयपुर की दोहिती सौ.कां. ऋचा जैन का शुभ विवाह चि. विनित गंगवाल के साथ दिनांक 11 मई, 2004 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 101/- रुपये की दान राशि प्राप्त हुई।

4. श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन कोल्हापुर द्वारा चि. अमितकुमार के विवाहोपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

5. श्री पदमकुमार चेतनलाल ड़ोणगावकर देवलगांवराजा-बुलढ़ाणा द्वारा चि. आनंद सुमेरचन्द के विवाह के उपलक्ष्य में 100/-रुपये दान राशी प्राप्त हुई है।

6. श्री राजकुमारजी शाह, जौहरी बाजार, जयपुर द्वारा दिनांक 2 मई,04 को तीनलोक मण्डल विधान के अवसर पर जैनपथप्रदर्शक समिति को 500/- रुपये प्रदान किये गये ।

7. श्री पीयूषकुमार एवं अनामिका जैन सूरतवालों दिनांक 24 मई, 2004 को की विवाह की 20 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1000/-रु. प्राप्त हुये हैं।

8. बुरहानपुर निवासी श्री बाबूलालजी चवरे के सुपुत्र चि. अतुलकुमार जैन के विवाहोपलक्ष में 251/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

उक्त सभी दान दातारों का जैनपथप्रदर्शक समिति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती है।

वैराग्य समाचार

1. स्व. श्री भंवरलालजी के सुपुत्र श्री अशोककुमारजी काला अशोका पेन्ट्स जयपुरवालों का दिनांक 8 मई, 2004 को देहावसान हो गया है। आप बहुत सरलस्वभावी थे।

आपकी स्मृति में परिवार की ओर से 1100/-रुपये जैनपथप्रदर्शक समिति एवं 1100/- रुपये वीतराग-विज्ञान को प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. स्व. प्रकाशभाई पंचोरी मुम्बई की स्मृति में शांतिलाल पंचोरी की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 101/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही हमारी मंगल कामना है। **– प्रबन्ध सम्पादक**

सभी जैन विद्यार्थियों के लिये यह सुअवसर है कि वालचंद इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नॉलोजी, सोलापुर नामक कॉलेज जैन अल्पसंख्यक होने के कारण इसमें जैन विद्यार्थियों के लिये 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित है।

इस कॉलेज में **कम्प्यूटर साइन्स एण्ड इंजीनियरिंग, इन्फोरमेशन टैक्नॉलोजी, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनीयरिंग, सिविल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, प्रॉडक्शन इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड टेलीकम्युनिकेशन** के पाठ्यक्रमों में जैन छात्रों को प्रवेश उपलब्ध है।

अत: जैन छात्र इंजीनियरिंग में 50 % आरक्षण सुविधा का शीघ्र लाभ उठायें।

- सम्पर्क -

डॉ. रणजीत गांधी, ट्रस्टी व सैकेट्री

मो. 9822072700

वालचंद इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नॉलोजी,

सेठ वालचंद हीराचन्द मार्ग, अशोक चौक, सोलापुर - 413006

दूरभाष : (0217) 2653040, 2651388, **फैक्स :** 2651538

वेबसाईट : www.witsolapur.org

ई-मेल : principal@witsolapur.org

प्रवेशफार्म आमंत्रित

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षाबोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) द्वारा ग्रीष्मकालीन परीक्षा-2004 के छात्र-प्रवेश फार्म सभी परीक्षा केन्द्रों को डाक से भिजवाए जा चुके हैं। परीक्षाऐं संभवत: जुलाई, 2004 में होंगी; अत: संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र छात्र-प्रवेश फार्म भरकर भिजवा देवें। जिन परीक्षा केन्द्रों को अभीतक भी प्रवेशफार्म नहीं मिले हों, वे कृपया तुरन्त परीक्षा बोर्ड कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबन्धक, परीक्षा विभाग**

नोट करें !

श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की ओर से लगनेवाला आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर 8 अगस्त से 17 अगस्त, 2004 तक टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में लगेगा। मुमुक्षु भाई-बहिन पधारकर ज्ञानार्जन करें।

(पृष्ठ - 7 का शेष ...)

अल्पज्ञ और वे सर्वज्ञ; हम दु:खी और वे सुखी ह्न ऐसे इसे जो अंतर देखकर दीनता आ रही है; उस पर आचार्य कहते हैं ह्न **ऐसी भी अनंती पर्यायें हैं, जो हममें और अरहंत भगवान में समानरूप से पाई जाती है। जिन पर्यायों में अंतर है; उन पर्यायों को क्यों देखते हो, जिनमें अंतर नहीं है, उन पर्यायों को देखो।**

तुम व्यापारी और हम पण्डित, तुम पैसेवाले और हम गरीब, तुम स्वस्थ और हम बीमार ह्न ऐसे क्यों देखते हो ? इस दृष्टि से देखो कि हम जैनी व तुम जैनी, हम मुमुक्षु और तुम मुमुक्षु। ह्न ऐसे समानता वाले बिन्दुओं को देखो। असमानता पर ही हमारा ध्यान क्यों जाता है ?

अरहंत को द्रव्य-गुण-पर्याय से जानो अर्थात् उनके शुद्धोपयोग से उन्हें जो प्राप्त हुआ है ह्न ऐसा अतीन्द्रिय ज्ञान व अतीन्द्रिय सुख ही अरहंत की पर्याय है; उसको जानो और फिर अपने सर्वज्ञस्वभाव को जानो। इसके साथ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की समानता भी जान लो।

भाई ! गलती तो एक समय की पर्याय में है। भूल है सुधर जाएगी। बड़े-बड़ों की गल्तियाँ सुधर गई हैं। ऐसा कौन था जो गल्तियों से रहित था। '**सदाशिव: सदाकर्म:**' ह्न ऐसा तो अपने यहाँ है ही नहीं। अपने यहाँ तो सब अनादिकाल से संसार में थे और फिर मोक्ष गए हैं।

इसतरह आचार्यदेव ने यहाँ सर्वज्ञता के स्वरूप पर बहुत वजन दिया है। यह जो सर्वज्ञता प्रगट हुई है; वह शुद्धोपयोग से ही हुई है। शुद्धोपयोग आत्मा को जानना ही है। इसलिए आचार्य कहते हैं कि इस जीव के श्रुतज्ञान ने यदि उस आत्मा को जान लिया तो समझ लो सबकुछ जान लिया। आचार्य कहते हैं कि तुम कल के सर्वज्ञ हो।

अभी, वर्तमान में भले ही हमें लोकालोक जानने में नहीं आ रहा हो; लेकिन अभी भी लोकालोक जानने का हमारा स्वभाव है। श्रुतज्ञान के माध्यम से जिसने ऐसा जाना, समझ लो उसने सब जान लिया।

समयसार की १४४ वीं गाथा की टीका में लिखा है कि आत्मा श्रुतज्ञान के माध्यम से 'आत्मा ज्ञानस्वभावी है' ह्न ऐसा जाने। मैं इसकी व्याख्या इसप्रकार करता हूँ कि यह रागस्वभावी नहीं है, क्रोधस्वभावी नहीं है, पर का कर्तृत्वस्वभावी नहीं है, पर का भोक्तृत्वस्वभावी नहीं है; सिर्फ जाननस्वभावी है। जानना-जानना और जानना ही इसका स्वभाव है। ●

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 8

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अब आगामी गाथा में कहते हैं –

रयणमिह इन्दणीलं दुद्धज्झसियं जहा सभासाए।
अभिभूय तं पि दुद्धं वट्टदि तह णाणमट्ठेसु।।३०।।

आचार्य कहते हैं कि जिसप्रकार दूध में पड़ा हुआ इन्द्रनील रत्न अपनी कांति से दूध को अभिभूत कर प्रवर्तित होता है, उसीप्रकार ज्ञान पदार्थों में प्रवर्तित होता है।

इन्द्रनील नामक एक रत्न होता है, मणि होता है। उसका स्वभाव इसप्रकार होता है कि दूध में डाल दो तो सारा दूध नीला-नीला दिखाई देता है।

इन्द्रनीलमणि की नीलिमा क्या दूध में प्रविष्ट हो गई ? यदि प्रविष्ट हो गई होती तो इन्द्र नीलमणि के उठाते ही दूध सफेद दिखाई नहीं देता। वह दूध नीला हुआ नहीं है, सिर्फ नीला दिख रहा है।

यदि नीला रंग उस दूध में डाल देते और वह दूध नीला हो जाता तो फिर उसे पृथक् करने का कोई उपाय नहीं था; परन्तु इन्द्रनीलमणि को आप उठाकर अलग कर देते हो तो वह दूध बिल्कुल सफेद है। जब तुम्हें नीला दिख रहा है, तब भी वह बिल्कुल सफेद है।

विवेकी को यह ख्याल में है कि वास्तव में दूध नीला नहीं, सफेद है; नीला दिखाई दे रहा है। इन्द्रनीलमणि की नीलिमा दूध में रंचमात्र भी नहीं गई है और न ही इन्द्रनीलमणि ने दूध में प्रवेश किया है।

जैसे दूध में बिस्कुट डाल दो तो, उसके रोम-रोम में दूध मिल जाता है, वह गल जाता है। ऐसे ही इन्द्रनीलमणि के रोम-रोम में दूध मिल गया है क्या ?

आचार्य कहते हैं कि इन्द्रनीलमणि में दूध का एक कण भी नहीं गया है। बाल्टी में इन्द्रनीलमणि जहाँ है, वहाँ दूध नहीं है और जहाँ दूध है, वहाँ इन्द्रनीलमणि नहीं है; फिर भी दूध नीला दिखाई दे रहा है।

ऐसे ही ज्ञान ज्ञेयों को जानता है और ज्ञेय ज्ञान में जाने जाते हैं; तथापि ज्ञान ज्ञेयों में रंचमात्र भी नहीं जाता है। हमें ऐसा दिखाई देता है कि ज्ञान ज्ञेयों में चला गया है। जैसे इन्द्रनीलमणि की नीलिमा दूध में चली गई है ह्न ऐसा दिखता है; उसीप्रकार ज्ञान ज्ञेयों में चला गया है ह्न ऐसा दिखाई देता है। यद्यपि वह इन्द्रनीलमणि दूध में रंचमात्र भी नहीं गया है; तथापि ऐसा ही कहा जाता कि वह पूरे दूध में फैला हुआ है; क्योंकि पूरा दूध उससे प्रभावित हुआ है; उसके कारण पूरा दूध नीला दिखाई दे रहा है; इसलिए ऐसा कहा जाता है कि इन्द्रनीलरत्न सर्व दूधगत है।

इसीप्रकार **ज्ञान ज्ञेय में नहीं गया है; फिर भी ज्ञान ने उस ज्ञेय को जाना है। इसी अपेक्षा से उसे सर्वगत कहा जाता है। तात्पर्य यह है कि वहाँ गये बिना, ज्ञेय में रंचमात्र भी हस्तक्षेप किए बिना जाना जा सकता है,** यह इसके ज्ञान का स्वभाव है, जो इसके ख्याल में नहीं आता है।

यह आत्मा सर्वज्ञत्वस्वभाववाला है। अरहंत भगवान की सर्वज्ञता स्वभाव में से आई है। यह स्वभाव प्रगट हुआ है, यह कोई विकार प्रगट नहीं हुआ है।

आचार्य कहते हैं कि आप पहले अरहंत को जानो, फिर आत्मा को जानने का नंबर आयेगा; क्योंकि तुम्हें सर्वज्ञता का ही स्वरूप ख्याल में नहीं है। तुम्हें सर्वज्ञता प्रगट करनी है न ? हाँ। तो फिर वह सर्वज्ञता क्या है ? कैसे प्रगट होगी ? इसके बारे में जान लो।

अपने लड़के के लिए कोई लड़की पसंद करते हैं तो क्या बिना देखे पसंद करते हैं ? वह हमारे घर में आएगी, जिन्दगी भर बहू बनकर रहेगी। इसीलिए कहते हैं कि थोड़ा पहले देख लेने दो।

कोई कहे कि जिन्दगी भर देखना है; क्योंकि वह तुम्हारे ही घर में बहू बनकर रहनेवाली है।' तब वह कहता है कि ह्न 'पहले नहीं दिखा सकते ? अरे ! बिना देखे आएगी कैसे ? देखूँगा पहले।

ऐसे ही सर्वज्ञता प्राप्त करनी है और अतीन्द्रिय ज्ञान एवं अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करना है तो प्रथम अतीन्द्रिय ज्ञान का स्वरूप क्या है, सर्वज्ञता कैसी है ? इसके संदर्भ में ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

बिना ही जाने, केवलज्ञान जब हो जाएगा, तब देख लेंगे, ऐसा नहीं चलेगा। भाईसाहब ! एक बार सर्वज्ञता प्रगट होने के बाद वह मिटनेवाली नहीं है; क्योंकि वह **'भंगविहीनो ही भवो'** अर्थात् भंग से रहित भव है। फिर वह अनंतकाल तक तुम्हारे ही पास रहेगी। यदि तुम्हें पसंद नहीं आई तो भी वापिस नहीं होगी।

जिसप्रकार एक बार दुकान से लिया गया सामान वापिस नहीं होता है; इसलिए दुकान से सामान लेने से पहले ही उसे अच्छी तरह से देख लेते हैं, उसके लेने का विचार करने से पहले ही उसे अच्छी तरह से समझ लेते हैं। उसीप्रकार प्रथम सर्वज्ञता का स्वरूप अच्छी तरह से समझ लो। उसके बाद जब हमारी आत्मा पर हमारी दृष्टि जायेगी; तब सर्वज्ञता प्राप्त करने का पथ प्रारम्भ होगा।

तब भी सर्वज्ञता प्राप्त नहीं होगी। फिर भी सर्वज्ञता प्राप्त करने में वर्षों लग सकते हैं। **सर्वज्ञता प्राप्त होने का समय सर्वज्ञता को समझे बिना आरम्भ ही नहीं होगा। अरहंत के स्वरूप को जाने बिना आत्मा के स्वरूप को जानने की प्रक्रिया प्रारम्भ ही नहीं होगी।**

अशुद्ध सोने में शुद्ध सोना कितना है; यह जानने के लिए, पहले शत-प्रतिशत शुद्ध सोना देखना होगा, जानना होगा। कहीं ऐसा न हो कि नाई के यहाँ गए और बोले ह्न

''मेरे बाल बना दो। बाल बनवाने के कितने रुपए लोगे ?''

तब वह कहता है ह्न ''यहाँ २ रुपए के भी बाल बनते हैं, १० रुपए के भी बाल बनते हैं, २० रुपए के भी बाल बनते हैं। तुम्हें जैसे बनवाने होंगे, वैसे बना दूँगा।''

फिर यह कहता है ह्न ''पहले दो रुपए के बाल बना दो, बाद में यदि नहीं जचेंगे तो २० रु. के बनवा लूँगा।''

वह नाई उस्तरा से सारे बाल साफ कर देता है।

यह व्यक्ति कहता है कि ''यह क्या ? यह तो अच्छा नहीं लगता। गड़बड़ हो गई। अब तो तुम २० रु. के बना दो।''

फिर नाई कहता है ह्न ''अब जब बाल ही नहीं रहें तो २० रुपए के बाल कैसे बनाऊँगा।''

ऐसे ही यह यदि बिना समझें सर्वज्ञता ले ले और फिर यह कहे कि इसमें तो सारी दुनियाँ दिखाई दे रही है। मुझे तो पर को देखना ही नहीं था; क्योंकि मेरी दृष्टि में तो पर को देखना-जानना पाप है। अब तो अनन्तकाल तक सम्पूर्ण लोकालोक ज्ञान में झलकेगा। अब क्या करूँ ? ऐसी स्थिति में सर्वज्ञता नष्ट नहीं होगी अर्थात् वह ऐसा उत्पाद है कि जिसका विनाश ही नहीं होगा।

अरे भाई ! **सर्वज्ञता पहले समझ में आती है और बाद में जीवन में आती है।**

ताजमहल जमीन पर बना, इसके पहले कागज पर बना होगा। कागज पर बनने के पहले किसी के ज्ञान में बना होगा। ऐसे ही सर्वज्ञता जब पर्याय में प्रगट होगी, तब पहले जब वह तेरी समझ में आवेगी, तेरे मतिज्ञान में सर्वज्ञता का स्वरूप ख्याल में आएगा और जब यह सर्वज्ञता का स्वरूप सम्यक् रीति से ख्याल में आएगा, तब सर्वज्ञता प्रगट होने का कार्य प्रारम्भ होगा।

यदि आप यह सोचते हैं कि जब सर्वज्ञता हो जाएगी, तब देख लेंगे। जब आत्मा का अनुभव हो जाएगा तो मैं अन्दर में देख लूँगा कि आत्मा कैसा है ? तब आचार्य कहते हैं कि ह्न ऐसा नहीं चलेगा।

प्रथम इस जीव को आत्मा को अच्छी तरह से समझना होगा। गुरु के मुख से, शास्त्र से आत्मा को अच्छी तरह से समझने के बाद सर्वज्ञता का मार्ग प्रशस्त होगा। इसलिए आचार्य यहाँ सर्वज्ञता का स्वरूप बता रहे हैं।

जैसे इन्द्रनीलमणि को दूध में डाल दिया तो दूध खराब हो जाएगा या इन्द्रनीलमणि खराब हो जाएगा ह्न यह चिंता दिमाग से पूर्णत: निकाल दो। कितनी ही बार इन्द्रनीलमणि को दूध में डालो तो भी न दूध खराब होनेवाला है और न ही इन्द्रनीलमणि। इन्द्रनीलमणि दूध में जाए अथवा न जाए तो भी दूध में कोई फर्क आनेवाला नहीं है। ऐसे ही **ज्ञान ज्ञेयों को जाने तो ज्ञेयों में कुछ ही गड़बड़ी होनेवाली नहीं है और ज्ञेय ज्ञान के जानने में आवें तो ज्ञान में कुछ गड़बड़ी होनेवाली नहीं है।**

इसे ही आचार्य ने मूलत: इसप्रकार स्पष्ट किया है ह्न

जदि ते ण संति अट्ठा णाणे णाणं ण होदि सव्वगयं।
सव्वगयं वा णाणं कहं ण णाणट्ठिया अट्ठा।।३१।।

यदि वे पदार्थ ज्ञान में न हों तो ज्ञान सर्वगत नहीं हो सकता और यदि ज्ञान सर्वगत है तो पदार्थ ज्ञान में स्थित कैसे नहीं होंगे ?

इसे हम इसप्रकार भी कह सकते हैं कि **चाहे ज्ञानगत सारा लोक है ह्न ऐसा कहो अथवा ज्ञान सर्वगत है ह्न ऐसा कहो ह्न दोनों का एक ही अर्थ है;** लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दोनों के मध्य वज्र की दीवार कायम है। यह दीवार पारदर्शी है। यह स्थूल काँच जैसी पारदर्शी नहीं; मणियों जैसी पारदर्शी है। यद्यपि इसे कोई तोड़ नहीं सकता; तथापि सामने के पदार्थ बिल्कुल साफ दिखाई देते हैं।

ज्ञेयों का स्वभाव ज्ञान में प्रवेश करने का नहीं है और ज्ञान का स्वभाव अपने अंदर उन्हें जगह देने का नहीं है। ज्ञान का स्वभाव वहाँ जाने का भी नहीं है। इस ज्ञानस्वभाव व ज्ञेयस्वभाव को जान ले तो सारी आकुलता स्वयमेव ही नष्ट हो जाएगी।

इसे स्पष्ट करनेवाली महत्त्वपूर्ण गाथा इसप्रकार है ह्न

गेण्हदि णेव ण मुंचदि, ण परं परिणमदि केवली भगवं।
पेच्छदि समंतदो सो, जाणदि सव्वं णिरवसेसं।।३२।।

केवली भगवान पर को ग्रहण नहीं करते, छोड़ते नहीं हैं, परिणमन नहीं करते। वे मात्र पूर्णरूप से सबको, सभी ओर से जानते और देखते हैं।

केवली भगवान संपूर्ण पदार्थों को बिना किसी विशेषता से, बिना किसी भेदभाव से निर्विशेष जानते हैं। इसको जानना, इसको नहीं जानना; इधर से जानना, उधर से नहीं जानना; आगे से देखना, पीछे से नहीं देखना ह्न ऐसा वहाँ नहीं है। वहाँ चारों ओर से जानना होता है।

केवली भगवान का यह स्वरूप है कि वे न ग्रहण करते हैं, न छोड़ते हैं और न ही परिणमित कराते हैं। संसार में, हमारा सबका यही धंधा है ह्न यह ले लो, यह छोड़ो, यह ग्रहण करो, इसका ऐसा कर दो; उसका ऐसा कर दो, चौबीसों घंटे हम इसी विकल्प में लगे रहते हैं। हम यदि भगवान बन जाएँगे तो बड़ी दिक्कत आएगी; क्योंकि वहाँ न किसी का लेना, न देना, न किसी को परिणमित कराना, बस जानते-देखते रहना है।

तब यह कहता है कि यहाँ पर गड़बड़ी होती रहे और हम मात्र जानते-देखते रहें ह्न ऐसा तो हमसे नहीं हो सकता। यहाँ इतनी गंदगी है, कूड़ा-करकट है, हमसे तो नहीं देखा जाता है।

तब तुम केवलज्ञानी मत बन जाना; नहीं तो बहुत मुश्किल हो जाएगी; क्योंकि अभी तो ऐसी गंदगी दिखाई देती है जो आँख से दिखाई देती है। केवली भगवान को तो हमारे-तुम्हारे पेट की गंदगी भी दिखाई देती है। तुम्हें तो पेट से बाहर आती है, तब दिखाई देती है, नाक तो गंदगी से भरी हुई है, हमें-तुम्हें तो जब वह नाक से बाहर आती है, तब दिखाई देती है; परन्तु केवलज्ञानी को तो नाक के भीतर की भी नाक दिखाई देती है।

तब यह कहता है कि हम से तो देखा नहीं जाता, इसका अर्थ यह है कि हम देखेंगे तो कुछ ना कुछ करेंगे और तुम हमें करने नहीं दोगे इसलिए हम देखेंगे भी नहीं।

उनसे कहते हैं कि **यदि तुम्हें धर्म करना है तो किसी को भी देखने-जानने से इन्कार नहीं करना पड़ेगा, ऐसा करने की तुम्हें रंचमात्र भी अनुमति नहीं मिलेगी; क्योंकि यह तो आत्मा के ज्ञातास्वभाव से इन्कार है।**

यही इस अधिकार का मूलभूत विषय है।

इसलिए आचार्य ने ८०वीं गाथा में कहा कि ह्न अरहंत की पर्याय को जानो। हमारी तथा अरहंतों की उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यरूप पर्याय एक-सी है।

यहाँ एक अपेक्षा यह भी हो सकती है कि जैसे इस जीव को लग रहा है कि अरहंत से हम कुछ कम हैं। जैसे हम रागी-द्वेषी और वे वीतरागी, हम

(शेष पृष्ठ - 5 पर .....)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

क्या आप चाहते हैं कि -

* आपके बालकों का जीवन तत्त्वज्ञान से आलोकित एवं सदाचार से सुगन्धित हो ?

* आपके बालकों के हृदय में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति वास्तविक बहुमान हो ?

* आपके बालकों को चारों अनुयोगों का सामान्य ज्ञान हो ?

यदि हाँ तो उसे आज ही
भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति
के सहयोग एवं प्रेरणा से स्थापित
स्थानीय पाठशाला में प्रवेश दिलाइये।
इस समय देश में 428 पाठशालायें चल रही हैं।

प्रमुख विशेषतायें

* वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा स्वीकृत बालबोध, प्रवेशिका, विशारद आदि 24 विविध ग्रन्थों संबंधी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाती है।

* शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा रोचक शैली में अध्यापन।

* नन्हें-मुन्नें बालकों पर धार्मिक पढ़ाई के गृहकार्य का कम से कम बोझ।

* समिति द्वारा नियुक्त निरीक्षकों द्वारा समय-समय पर पाठशालाओं का निरीक्षण, उचित मार्गदर्शन एवं सहायता ।

* परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करनेवाले छात्रों को विविध माध्यमों द्वारा विशेष प्रोत्साहन ।

* अनुदान-इच्छुक प्रत्येक पाठशाला को 100 रुपये मासिक अनुदान व्यवस्था।

एक पोस्टकार्ड लीजिए !

यदि आपको जैनपथप्रदर्शक सही समय पर नहीं मिलता है या आपका पता बदल गया है तो अपना पुराना पता काटकर पोस्टकार्ड पर ऊपर की तरफ चिपका दीजिये एवं नीचे की तरफ सही पता पिन कोड नं. सहित लिखकर हमें भेजें।

यदि आपके पास जैनपथप्रदर्शक की एक से अधिक प्रतियाँ आती हों तो कृपया दोनों पते या उनके ऊपर लिखे क्रमांक हमें अवश्य लिखें।

आपके सक्रिय सहयोग से जैनपथप्रदर्शक अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँच सकेगा। **- प्रबन्ध सम्पादक**

जून माह में आनेवाली तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

4 जून	- भगवान ऋषभदेव का गर्भकल्याणक
8 जून	- भगवान वासुपूज्य का गर्भकल्याणक
10 जून	- भगवान विमलनाथ का मोक्षकल्याणक
12 जून	- भगवान नमिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
24 जून	- भगवान महावीर का गर्भकल्याणक
25 जून	- भगवान नेमिनाथ का मोक्षकल्याणक

बुन्देलखण्ड में ग्रुप शिविर सानन्द सम्पन्न

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, द्रोणगिरि और अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से दिनांक 19 अप्रैल से 26 अप्रैल, 2004 तक बुन्देलखण्ड के शाहगढ़, बानपुर, ललितपुर, हीरापुर, खड़ैरी, मड़ावरा, घुवारा, बिनैका, बण्डा, गौरझामर, जबेरा, दमोह, बकस्वाहा, गुढ़ा आदि 21 स्थानों पर विशाल धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

शिविर में लगभग 1500 बच्चों ने नैतिक एवं धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। शिविर का संयोजन श्री जीवनकुमारजी शास्त्री घुवारा और श्री सुनीलकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ ने किया। शिविर में पण्डित माधवप्रसादजी शास्त्री का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

शिविर में पं. आशीषजी जबेरा, पं. नवीनजी बरां, पं. दीपेशजी गुढ़ा, पं. रवीन्द्रजी काले, पं. जितेन्द्रजी खड़ैरी, पं. अमितजी लुकवासा, पं. जितेन्द्रजी बानपुर, पं. जितेन्द्रजी सिंगोड़ी, पं. वीरेन्द्रजी बरां, पं. प्रमेशजी जबेरा, पं. सोनलजी जबेरा, पं. धीरजजी जबेरा, पं. अभयजी खड़ैरी आदि विद्वानों ने अपनी विशिष्ट शैली से विद्यार्थियों को संस्कारित किया।

दिनांक 26 अप्रैल को सामुहिकरूप से शिविर का समापन सिद्धायतन द्रोणगिरि में आयोजित विद्यमान 20 तीर्थंकर जिनालय के शिखर शिलान्यास महोत्सव के दौरान किया गया। इस अवसर पर सभी उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। **- सुनील शास्त्री, शाहगढ़**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (प्रथम) 2004

J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास * **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127